

पाठ—14 शकुनि का प्रवेश

राजसूय यज्ञ का ठाट—बाट देखकर दुर्योधन को अच्छा नहीं लगा और उसने मामा शकुनि से सलाह करी ।

दुर्योधन की चिंता को देखते हुए मामा शकुनि ने समझाया कि जो पांडवों को न्यायपूर्वक राज्य प्राप्त हुआ है वे उसी का उपभोग कर रहे हैं ।

मामा शकुनि ने दुर्योधन की इस चिंता को भाँप कर कहा कि युद्ध खतरनाक है इसलिए युद्ध की बात मत करो ।

शकुनि ने दुर्योधन को चतुराई से काम लेने के लिए कहा और धृतराष्ट्र से पांडु पुत्रों को चौसर खेलने के लिए निमंत्रण भिजवाने के लिए आग्रह किया ।

धृतराष्ट्र ने इस आग्रह को सुनकर कहा कि इस प्रकार के खेल आपस में वैमनस्यता को बढ़ाते हैं ।

दुर्योधन की जिद के आगे धृतराष्ट्र को घुटने टेकने पड़े और दुर्योधन का आग्रह मानकर चौसर का खेल खेलने की अनुमति दे दी ।

विदुर ने कहा कि यह हमारे कुल के लोगों में आपसी मनमुटाव और मतभेद का कारण बनेगा और विपदा ही आएगी ।

धृतराष्ट्र ने अपनी असमर्थता जताते हुए विदुर को निमंत्रण देने के लिए भेजा ।